GOVT. BRENNEN COLLEGE THALASSERY

K16P 0372

Reg. No. : .....

Name : .....

Second Semester M.A. Degree (Regular/Supplementary/Improvement) Examination, March 2016

(2014 Admn. Onwards)

HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

HIN 2C07 : Modern Hindi Poetry (up to Nayi Kavitha)

Time: 3 Hours Max. Marks: 80

I. **निर्देश** : **पाँच** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए : **(5×1=5)**

1) मुक्त छंद किसे कहते है ?

2) द्विवेदी युग के चार कवियों के नाम लिखिए।

3) 'तार सप्तक' के चार कवियों के नाम लिखिए।

4) प्रगतिवाद की प्रमुख दो प्रवृत्तियाँ।

5) कामायनी के प्रमुख पात्र किसके प्रतीक है ?

6) पंतजी की दो रचनाएँ लिखिए।

7) भारतेन्दु युग की चार पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

8) छायावाद की चार विशेषताएँ लिखिए।

9) द्विवेदी युग की कविता की भाषा शैली की मुख्य दो विशेषतायें लिखिए।

II. **निर्देश** : **तीन** प्रश्नों के उत्तर कम से कम **300** शब्दों में लिखिए : **(3×5=15)**

10) माखनलाल चतुर्वेदी की कविता की विशेषताएँ लिखिए।

11) महादेवी वर्मा की कविता के भावपक्ष पर प्रकाश डालिए।

12) नौका विहार के दार्शनिक पक्ष पर विचार कीजिए।

P.T.O.

13) खडीबोली पद्य के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका के योगदान पर लिखिए।

14) नागार्जुन की काव्य चेतना पर प्रकाश डालिए।

III. **निर्देश : तीन** प्रश्नों पर निबंध कम से कम **300** शब्दों में लिखिए : **(3×12=36)**

15) छायावादी काव्यगत विशेषताओं के आधार पर कामायनी की समीक्षा कीजिए।

16) आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के योगदान पर विचार कीजिए।

17) नयी कविता की विशेषता के संदर्भ में मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' की आलोचना कीजिए।

18) पठित कविताओं के आधार पर निराला की प्रगती चेतना को स्पष्ट कीजिए।

19) पठित कविता के आधार पर कुवर नारायण की काव्यकला की आलोचना कीजिए।

IV. **चार** प्रश्नों की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए : **(4×6=24)**

20) प्रकृति के यौवन का श्रृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल,
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल।

21) कुछ समय स्तब्ध हो रहे राम छवि में निमग्न
फिर खोले पलक कमल-ज्योतिर्दल ध्यान लग्न,
हैं देख रहे मन्त्री, सेनापती, वीरासन
बैठे उमड़ते हुए, राघव का स्मित आनन।

22) पहली सी झंकार नहीं है।
और नहीं यह मादक राग,
अतिथि ! किन्तु सुनते आओ
टूटे तारों का करुण विहाग।

23) प्रकृति नर्तकी सुधर
अखिल में व्याप्त सूत्रधर !
हमारे निज सुख, दुःख निःश्वास
तुम्हें केवल परिहास

24) ला के फूल कमलदल को श्याम के सामने हो,
थोड़ा थोड़ा विपुल जल में व्यग्र हो हो डुबाना।
यों देना ऐ भगिनी जतला एक अंभोजनेत्रा,
आँखों को हो विरह-विधुरा वारि में बोरती है।

25) हा ! बन्धुओं के ही करों से बन्धुगण मारे गये
हा ! तात से सुत, शिष्य से गुरू स-हठ संहारे गये !
इच्छा रहित भी वीर पाण्डव रत हुए रण में !
कर्तव्य के वश विज्ञ जन क्या-क्या नहीं करते कहो ?